भारत दर्शन

(गीत)

शुभ नारायण सिंह 'शुभ'

www.bhojpurisahityangan.com

भारत दर्शन

(गीत)

रचनाकार

शुभनारायण सिंह 'शुभ'

शिवालिक प्रकाशन

www.bhojpurisahityangan.com

प्रकाशन	SHIVALIK PRAKASHAN 4648/21, Ansari Raod , Darya Ganj , N Delhi 01142351161 , 9811693579
ISBN	978-81-961005-8-2
सहयोग राशि	225 रुपया ।
सर्वाधिकार	कवि
प्रकाशन के वर्ष	जनवरी 2024 ई० ।
अक्षर संयोजक	**अखिलेश कुमार यादव,** संजय कम्प्यूटर, मशरक, सारण (बिहार)

Bharat Darshan

A Great Selection of Bhojpuri Kavita

Poet ***Shubh Narayan Singh 'Shubh'***

©

www.bhojpurisahityangan.com

भूमिका

बटोहिया परम्परा के 'भारत–दर्शन'

शुभ नारायण सिंह 'शुभ' के गीत 'भारत–दर्शन' देखे–पढ़े के मिलल। ई गीत पढ़ते भिखारी ठाकुर के 'बिदेसिया' आ रघुवीर नारायण जी के प्रसिद्ध 'बटोहिया' अनियासे ईयाद परे लागल ह। बिदेसिया राग भोजपुरिया समाज में अतना लोकप्रिय भइल कि 1911 में रघुवीर नारायण जी 'बटोहिया' लिख के एकरा के अमर बना दिहनीं। ओकरा बाद 1921 में असहयोग आंदोलन के समय बाबू मनोरंजन प्रसाद सिन्हा के लिखल 'फिरंगिया' गीत बहुते प्रसिद्ध भइल रहे। एकर शुरूआती लाइन रहे–

सुन्दर–सुघर भूमि भारत के रहे रामा,
आज इहे भइले मसान रे फिरंगिया,
अन्न–धन जल बल बुद्धि सब नास भइलें,
कवनो के ना रहल निसान रे फिरंगिया,''

एकरा बाद पंडित महेन्द्र शास्त्री के 'किसनवा' शीर्षक कविता के परम्परा में कुछ अचर्चित रचनाकार लोग के कविता 'वकिलवा' आ लुटेरवा चलल रहे। कहनाम ई बा कि ई सब गीत अब खाली गीते ना रहे, बलुक भोजपुरी संस्कृति के सुख–दुःख आ मान–गुमान के गावे वाला एगो सुंदर राग भी ह। एकर राग पूर्वी ह। एही राग में भोजपुरी के मशहूर–मशहूर गीत गवाइल बाड़ी सन। महेन्दर मिसिर के छपरहिया के इहे राग ह।

www.bhojpurisahityangan.com

जइसे 'बटोहिया' में रघुवीर नारायण जी अपना अखंड देश भारत के प्राकृतिक भूगोल आ संस्कृति के गुणगान कइले बानी ओइसहीं गावे–अलापे के प्रयास कतना लोग करत आ रहल बा। महात्मा गाँधी के हत्या के बाद नाथूराम के फांसी के सजाय के बाद एगो बहुते मार्मिक गीत केहू लिखले रहे। बचपन में (1960 के दशक में) पढ़ल ओह गीत के शुरूआती पंक्ति रहे–

'परम–पवित्र भूमि भारत के देशवा में भइले जनमवां तोहार नाथूरमवां।
जमते ही माता तोरा काहे ना जहर देली माता
कोखी दगिया लगवले नाथूरमवां।

एही परम्परा में 2010 में छपरा सूफी संत कवि जौहर शफियाबादी के 'मितवा' गीत–कविता बहुते लोकप्रियता से गवाइल बा। जौहर जी के एह गीत में अपना देश के आन–बान आ स्वाभिमान खातिर देशवासी नवजवान लोग के आह्वान कइल गइल बा–

'कहत जौहर जाग देश के जवनवाँ से।
जिय जनि जिनिगी उधार मोरे मितवा।।

शुभ नारायण जी के ई 'भारत–दर्शन' गीत आजादी के अमृत महोत्सव में लिखाइल बा, एह गीत में अपना भारत देश के प्राकृतिक आ सांस्कृतिक सुंदरता के संगे–संगे धार्मिक मेल–मिलाप के भी सुंदर वर्णन कइल गइल बा। गीत के शुरूआत देखल जाव–

www.bhojpurisahityangan.com

'पुण्य भूमि भारत के महिमा अपार सुन,
जग में ना दोसर देश जोरवा लगावेलें।
एकर गुणगान मन करत बखान अब,
दुनिया में नाहीं अइसन देश मिली पावेलें।।
ऋषिमुनि साधु संन्यासी जहाँ योग साधे,
हड्डी तक तेजी जहाँ असुर नाश करावेलें।।

एह गीत में कुल्ह 60 गो पद बा जवना के अर्थ कविजी गद्य में लिखले बानी, एह दिसाई ई गीत बहुते निमन कहाइ कि कविता के अर्थियवला से पढ़वइया लोग के सुविधा हो जाला। एहिजा हमार एगो सुझाव ई बा कि भोजपुरी में लिखल एह तरह के किताबन के अरथ अब हिन्दियों में लिखे के चाहीं। एह से ई होई कि दोसरा भाषा के पढ़वइया लोग भोजपुरी के मरम के जान जाई।

राष्ट्रीय भावना के एह गीत–रचना से शुभ नारायण सिंह 'शुभ' जी का बहुते यश मिली। हम दिल से बधाई आ शुभकामना दे रहल बानीं।

डॉ0 शंकर मुनि राय 'गड़बड़'
9893863548

www.bhojpurisahityangan.com

आपन बात

अइसे त हमार जन्म आजाद भारत में भइल, बाकिर कुछ इतिहास के दत्तचित अध्ययन आ कुछ पुरूखन के जबानी भा कुछ खुद का जीवन में देखल, सुनल चाहे अनुभव का आधार पर भारत–दर्शन के एगो संक्षिप्त झाँकी प्रस्तुत करे के इच्छा भइल आ हम आपन कलम उठा लेनीं।

सचमुच में भारत अइसन पवित्र आ मानवतावादी दृष्टिकोण वाला देश बा, जवना के बराबरी करे वाला एह धरती पर दोसर कवनो देश नइखे। प्राकृतिक, राजनैतिक भा आध्यात्मिक कवनो दृष्टिकोण से एह देश पर नजर डालल जाव त एह दुनिया में कवनो अइसन पवित्र पुण्य भूमि वाला देश ना भेंटाई। इहे देश अइसन बा, जहाँ के साधु–संन्यासी लोग अपना योग साधना का बल पर आपन हड्डी तक त्याग के राक्षसन के नाश करवले बा। भिन्न–भिन्न जाति धर्म भा भेष–भूषा रहला बा बादो ई देश अनेकता में एकता के प्रतीक बा। आ इहे अद्भूत अनमोल राष्ट्रिय संस्कार हमरा एह देश के अग्रणीय सौंदर्य बोध बा। एह देश में बहुविध वृतान्त कौशल के सदा जयजयकार भइल बा। अवतारवाद का दृष्टि से देखल जाव त राम, कृष्ण, बुद्ध, महावीर इत्यादि महापुरूष लोगन के अवतार इहवें भइल बा। प्राकृतिक

www.bhojpurisahityangan.com

दृष्टि से अइसन जलवायु वाला दोसर कवनो देश नइखे। अतने ना ई देश अइसन भू–भाग में बसल बा, जवन चारो ओर से सुरक्षित बा। गंगाजल जइसन पवित्र जल वाला नदी कहीं अन्य जगह ना पावल जाला। एह देश का नर–नारी सब लोगन में अपना देश का प्रति देशभक्ति के भावना कूट–कूट के भरल बा। एहू में बिहार जइसन राज्य त बिड़ले कहीं भेंटाई। जहाँ विश्व भर से लोग नालंदा जइसन खुला विश्वविद्यालय में शिक्षा प्राप्त करे खातिर आवत रहे। एही देश में काश्मीर अइसन जगह बा, जवन धरती पर स्वर्ग का नाम से जानल जात रहे।

1958 ई0 का बाद जब हम पूरा होशगर हो गइनीं तब से कुछ–कुछ जाने–सुने के मौका मिलल। सबसे पहिले 1962 के चीन–भारत के लड़ाई के समाचार रेडियो से सुने के मौका मिलल। जब ई सुननीं कि देश के बहादुर जवान बहादुरी का साथ–साथ लड़ते–लड़ते एतना चौकी पीछा हट गइल। ताज्जुब के बात बा कि लड़ते–लड़ते पीछा हट गइल। आखिर काहे ना हटो। ना हथियार रहे आ ना आदेश। एह तरे 1965, 1971 भा 1999 के युद्ध भारत पाकिस्तान का बीच कुछ छिट–फुट घटनन के छोड़ के भइल, जवना में भारत आज का लेखा सशक्त ना रहे, तबो ओकरा पर भारी रहे। आज पूरा देशवासी का भीतर देश–प्रेम के भावना कुछ स्वार्थवादियन के छोड़ के जागृत हो चुकल बा। ई बात जरूर बा कि कुछ नकारात्मको सुभाव विचार के लोग बा। त ई कवनो

www.bhojpurisahityangan.com

लमहर बात नइखे। अइसन लोग हर युग में रहल बा आ रही। विकास खातिर असइनो लोग के रहल जरूरी बा काहे कि नकारात्मक विचार के लोग ना रही त सकारात्मकता के विकास ना होई। ई सृष्टि के नियम बा कि दुनु विचारधारा के रहल जरूरी बा। जवना के शास्त्र–पुराण आदि गवाह बा। एही विचारधारा का नाम से नकारात्मक भा साकारात्मक विचार सोंच राखे वाला लोग के भिन्न–भिन्न नाम से नवाजल गइल बा, जवन प्रवृतिमूलक बा, काहे कि सब लोग के जन्म मानव आकृति में भइल तबो शास्त्रन में कुछ गलत विचार धारा आ क्षुद्र बुद्धि प्रकृति का लोग के दू गोर के पशु इत्यादि कहल गइल बा।

वर्त्तमान समय में देश सशक्त शासक का शासन में काफी आगे बढ़ चुकल बा आ आज के शासक भारतीय जवानन के अति आधुनिक हथियारन से लैश कर के खुला छूट दे देले बा, जवना से दुश्मन का देश का आगे बढ़े में सोंचे के पड़ रहल बा, जवन ओह घड़ी का सरकारन में ना रहे। अगर एह ढंग के शासन व्यवस्था रहल त निश्चित रूप से देश जगतगुरू बन के रही। ठीक एही लेखा भारत के शांति के राजकुमार विश्व शांति दूत श्री प्रेम रावत जी पूरा विश्व में शांति स्थापित करे खातिर आपन शांति के संदेश दे के पूरा विश्व के चेता रहल बाड़न कि जब तक हर मनुष्य अपना भीतर शांति के अहशास ना करी तब तक विश्व में शांति संभव

www.bhojpurisahityangan.com

नइखे। प्रेम रावत जी के स्पष्ट कहनाम बा कि विश्व में शांति संभव बा यदि लोग अपना के पहचान लेवे। उहाँ के एगो नारा बा "तुम मुझे प्रेम दो मैं तुम्हें शांति दूँगा" एह तरे भारत अपना ज्ञान–विज्ञान का बल पर विश्व में शांति स्थापित करे ला अथक प्रयास कर रहल बा हमरा पक्का विश्वास बा कि भारत निश्चित रूप से जगतगुरू बन के रही।

भारत दर्शन नैतिक ऊर्जा के अंतिम शिखर पर बइठल मानवीय संवेदना के तत्वरूप आ ओजपूर्ण व्याख्यान के मर्मस्पर्शी अनुभूतिपरक पताका का रूप में हम परोसे के भरपूर कोशिश कइले बानीं, जवना में संपूर्ण राष्ट्रीय यशोगान अपना ऐतिहासिक साक्ष्यन का आधार पर मणिकांचन बन के चमक–दमक रहल बा। फिरंगिया डॉ0 मनोरंजन प्रसाद, बटोहिया रधवीर नारायण, लुटेरवा सुजस जी, किसानवा महेन्द्र शास्त्री एही ढंग से वकीलवा इत्यादि रचना धरोहर के रूप में हमरा भोजपुरी में बा। ई सब रचना गुलामी के जंजीर तुड़े खातिर रचाइल रही सन आ स्वातंत्र्योत्तर भारत में ई परम्परा कुंठित होत रहल ह, जवना के एगो नया दिशा देत ओह परम्परा के सूफी संत डॉ0 जौहर शफियाबादी जी द्वारा विरचित 'मितवा' संग्रह राष्ट्रीय यशोगान एगो जीवन्त रूप प्रदान कइल गइल बा। ओही भावभूमि पर, बलुक कुछ आउर सहोर–बटोर के एगो अत्याधुनिक दिशा देवे के

www.bhojpurisahityangan.com

प्रयास हमहूँ कइले बानीं। लगभग ई परम्परा समाप्ति का कगार पर रलऽ। आज के बाजारवादी उपभोक्तावादी, फूहड़, अश्लील गीत गवनई का विरूद्ध ई एगो सफल शंखानाद सिद्ध होई। हमरा ई पक्का विश्वास बा, काहे कि हम अपना परिश्रम आ निष्ठा से पूर्ण रूपेण संतुष्ट बानीं। हँ अपने सुधी पाठक का नजर में कवनो त्रुटि देखाई दे त जरूर हमरा के सूचित करेब, ताकि अगिला एडिसन से हम सुधार लगा सकीं। राउर स्वागत बा।

अंत में अपना सब इष्ट–मित्रन आ सब भोजपुरी भाषा–भाषी भाई बहन लोग के जय भोजपुरी कहत ई रचना निवेदित करत बानीं जवना में विशेष रूप से आचार्य प्रेमचंद, सूफी संत डॉ0 जौहर शफियाबादी, डॉ0 शंकरमुनि राय, डॉ0 गुरूचरण सिंह, निरशुनारायण सिंह, प्रो0 नरेन्द्र कुमार तिवारी, डॉ0 पवन कुमार साह, सुजीत कुमार सिंह 'सौरभ', राजेन्द्र गुप्त इत्यादि लोग का प्रति आभार व्यक्त करत बानीं, जेकर हमरा समय–समय पर सहयोग मिलत रहल बा।

www.bhojpurisahityangan.com

भारत–दर्शन

पुण्य भूमि भारतऽ के महिमा अपारऽ सुनऽ ।
जग में ना दोसर देशऽ जोरवा लगावे लें ।1।

एकर गुणगानऽ मनऽ करतऽ बखानऽ अबऽ ।
दुनिया में नाहीं अइसन देशऽ मिलि पावेलें ।2।

ऋषि मुनि साधु संन्यासी जहाँ योगऽ साधे ।
हड्डी तक तेजी जहाँ असुर नाश करावेलें ।3।

ज्ञानऽ के बखान एकरा देशवा विदेशवा में ।
करतऽ बखानऽ देशऽ ध्वजा फहरावेलें ।4।

नाना रे रकम भेषऽ तबो बाटे एक देशऽ ।
अनेकता में एकता ना कहीं मिली पावेलें ।5।

हिंदू मुस्लिमऽ सिक्खऽ अउरी इसाई जहाँ ।
सब लोग मिली जूली एकता बनावेलें ।6।

धरती पर चारो ओर घूमी के अब देखि आव ।
मानवता के अइसन रूप ना कहीं मिलि पावेलें ।7।

www.bhojpurisahityangan.com

अइसनऽ देशऽ जेकर छवि बा अनूप सुनऽ ।
केहू नाहीं एकर गुणगान करी पावेलें ।8।

गुण गावत थकी गइलें सुर नर मुनि सबऽ ।
कहाँ केहू एकर गुणगान करी पावलें ।9।

माई भूमि के जे केहू परम सपूतऽ बाटे ।
जानवा के बाजी देई प्राण में बसावेलें ।10।

अब नाहीं अँखिया उठाई केहू देशवा पर ।
सबऽ नर नारऽ मिली लाज के बचावेलें ।11।

करत बखानऽ मनऽ कबो ना अघात अबो ।
दुनिया के लोग दर पे शीषवो झुकावेलें ।12।

दिन उहो दूर नाहीं बाटे अबऽ सुनीं सभे ।
आजुए त जगऽ विश्वगुरू बूझि पावेलें ।13।

उत्तरऽ में हिमगिरि खड़ा पहरादारऽ इहाँ ।
नाहीं केहू एकरा से अँखिया मिलावेलें ।14।

www.bhojpurisahityangan.com

अब कहाँ चीनी लोगऽ आवे के हिम्मत करीहें ।
भारत के जवानऽ दालऽ दरी के देखावेलें ।15।

परब–त्योहारऽ जहाँ मिली के मनावत सभे ।
तनिक नाहीं मनवा में भेद उपजावेलें ।16।

जाति धरम सब कुछऽ दूर करी मनवा से ।
आपसऽ में मिलि जूली प्रेम रस बहावेलें ।17।

देशऽ अवतारन के इहो ह महान् सुनऽ ।
साधु संत भक्त लोगऽ प्रभु गोहरावेलें ।18।

प्रेमे हटे जिन्दगी तू प्रेमे से जीवन जीअ ।
शांति के संदेश दे के प्रेम रस बहावेलें ।19।

विश्व शांति दूत प्रेमऽ घूमी–घूमी दुनिया में ।
शांति के संदेश दे के सबके चेतावेलें ।20।

तनिक नाहीं डर इहाँ हिम गिरिराज जहाँ ।
जड़ी–बूटी संगे गंगा जल बहवावेलें ।21।

www.bhojpurisahityangan.com

दक्खिनऽ दिशा में सिंधु धारऽ बा बहत जहाँ ।
केनहूँ से दुश्मन तनिको पार नाहीं पावेलें ।22।

गंगा रे जमुन जसऽ आउर नाहीं नदी कहीं ।
सरस्वती नदी से मिलि त्रिवेणी कहलावेलें ।23।

कलकल निनाद संगे गंगा जस पवितर जलऽ ।
दुनिया में अउरी कहीं नाहीं मिल पावेलें ।24।

संत में महान संतऽ नानकऽ कबीर जसऽ ।
जन–जन में अलख के गति लखवावेलें ।25।

शांति के संदेशऽ सुनी प्रेमऽ के बखानवा से ।
देशवा के लोग अबऽ आनंद खूब मनावेलें ।26।

भक्त कवि विद्यापति कालीदासऽ सूरऽ आउर ।
खुसरू निजामऽ ख्वाजा पलटु बतलावेलें ।27।

गालिब टैगोर दादू कामता आउर लक्ष्मी सखी ।
परमऽ पुरूष के दरशन भीतरे करावेलें ।28।

www.bhojpurisahityangan.com

बुद्ध महावीरऽ रामऽ कृष्ण के बखान जहाँ ।
विवेका विश्वामित्र जहाँ ध्वज फहरावेलें ।29।

रामकृष्ण परमहंसऽ साधकऽ महान् जहाँ ।
साधना का बले सब देवऽ के बोलावेलें ।30।

रामचरित मानस के करी के रचनवा से ।
तुलसीदासऽ जन–जन का ओठवे पर छावेलें ।31।

आतमज्ञान के करी के बखान सबऽ संतऽ लोगऽ ।
घटहीं में ईश्वर के रूप दरशावेलें ।32।

ऋतुअन के गति जहाँ भिन्न–भिन्न बाटे तबो ।
लोगऽ सबऽ समरसऽ दिनवा बितावेलें ।33।

दूई रे महिनवा पर बदलत ऋतु जहाँ ।
सबऽ ऋतु अनुपम बहार ले के आवेलें ।34।

चढ़त बसंत ऋतु गजबे सोहावन लागे ।
धरती के रूपवा अनूपऽ देखलावेलें ।35।

www.bhojpurisahityangan.com

बहत पुरवइया अउरी पछुआ बेयार सुनऽ ।
गछियन का फूलवन के गंध फइलावेले ।36।

प्रवासी रे चिरईयन के मीठी–मीठी तानऽ अब ।
जन–जन का हियरा में जगहो बनावेले ।37।

कोइली के कूहू–कूहू पपिहा के पिउ–पिउ ।
होत भिनुसार ब्रह्म बेला में जगावेले ।38।

धूपवो चननवा के खुशबू पवन लेके ।
खूबऽ रे सुगंधऽ भीनी–भीनी फइलावेले ।39।

सुँघत त सुगंध गंधऽ मस्ती में लोग इहाँ ।
देश गीत झूमी–झूमी गाई के सुनावेलें ।40।

सरहद पर देशऽ के जवान जहाँ गरजतऽ ।
पलटन में नारी के कमाल देखि पावेलें ।41।

अइसन देशवा के गुण का बखानीं अबऽ ।
परखी अलग से दुश्मन दुमऽ सटकावेलें ।42।

www.bhojpurisahityangan.com

केतना ले गाई गुणऽ कहतानीं शुभऽ सुनऽ ।
खेत में किसान सबऽ फसल गीत गावेलें ।43।

गरमी आ बरखा से कबहूँ ना हिचकत ।
किसीम–किसीम के सबऽ अन्न उपजावेलें ।44।

सोना के चिरईया ई देशवा कहात रहे ।
अन्न धनऽ सोनवा लुटेरा लेई गइलें ।45।

भीतरऽ से खोंखर एही देशवा के कई देलस ।
तबो नाहीं नीक लोग ईमान के गँवावेलें ।46।

काश्मीर सरग जसऽ हिंद का धरतिया पर ।
नाहीं अइसन सरग कहीं अउरी मिल पावेलें ।47।

काशी, मथुरा, वृंदावनऽ परम सोहावन लागे ।
अवध के महिमा खूबे हिया के जुड़ावेले ।48।

विश्वगुरू रहे कबो दुनिया में शोर एकर ।
फेर विश्वगुरू होई संत लोग बतावेलें ।49।

www.bhojpurisahityangan.com

विश्व भर से लोग जहाँ नालंदा में पढ़े आवे ।
शांति के निकेतन मशहूर कहलावेलें ।50।

योगी संन्यासी अउरी तपसी के देश इहो ।
योग के अँजोर नाहीं चोर सहि पावेलें ।51।

बेरि बेरि कहीं सुनऽ मनवा में तनी गुनऽ ।
भगत के पुकार सुनी खाली पाँवे धावेलें ।52।

सबकर साथ अउरी सबका विकासऽ खातिर।
भारत के सपूत लोगऽ प्रण दोहरावेलें ।53।

इन गिनल चुनल कुछ नेता बाड़ें अब सुनऽ।
भारतऽ के माथा ऊँचा करी के देखावेलें ।54।

हिंद के सपूत सबऽ मिली जूली एकऽ हो के।
सीमवा पर चीनऽ अउरी पाकऽ के चेतावेलें।।55।

सावधान रहऽ सुनऽ चीनी अउरी पाकवा से।
इहे दूनु मिली के आतंक फइलावेलें ।56।

www.bhojpurisahityangan.com

बूझऽ मति बासठऽ के हटे इहो देशवा से।
भारत के जवानऽ थुथुन रगड़ी देखावेलें ।57।

भारत अखंड जवन फेरू से अखंड होई।
सपना ई देश भक्तऽ हिया में बसावेलें ।58।

भारत के तिरंगा पूरा विश्व में अमर होई।
शुभऽ के बा आश विश्वासऽ ई बतावेलें ।59।

केतना ले गाईं गुण कहतानीं शुभऽ सुनऽ।
दुनिया के लोग सबऽ माथवा झुकावेलें ।60।

www.bhojpurisahityangan.com

भारत–दर्शन

पुण्य भूमि भारतऽ के महिमा अपारऽ सुनऽ ।
जग में ना दोसर देशऽ जोरवा लगावे लें ।1।

भारत माता के महिमा अपार बा। ई महान् पुण्य के भूमि बा, जवना के दुनिया के कवनो देश बराबरी नइखे कर सकत। कवनो दिसाई देखल जाव त एह धरती पर के कवनो देश एकरा सामने बावना दिखाई पड़त बा।

एकर गुणगानऽ मनऽ करतऽ बखानऽ अबऽ।
दुनिया में नाहीं अइसन देशऽ मिलि पावेलें ।2।

एह देश का गुण के बखान करे में मन हार जाता आ ई स्पष्ट हो जाता कि एह धरती पर अइसन दोसर कवनो देश नइखे, जवन एकरा लेखा होखे।

ऋषि मुनि साधु संन्यासी जहाँ योगऽ साधे।
हड्डी तक तेजी जहाँ असुर नाश करावेलें ।3।

एह देश के साधु–संन्यासी भा तपस्वी लोग अनवरत साधना में रत रहल बा। इहाँ तक कि दधीचि जइसन तपस्वी अपना हड्डी के दान कर के राक्षस के वध करवलें आ सज्जन लोग के राहत दिलवलें।

www.bhojpurisahityangan.com

ज्ञानऽ के बखान एकरा देशवा विदेशवा में।
करतऽ बखानऽ देशऽ ध्वजा फहरावेलें ।4।

ज्ञान का मामला में ई देश कबो विश्व गुरू कहात रहे। आजो अध्यात्मिकता का मामला में ई देश सब देशन से आगे बा आ एह देश के झण्डा अपना रंग में फहरा रहल बा। तिरंगा एकर शान बा।

नाना रे रकम भेषऽ तबो बाटे एक देशऽ।
अनेकता में एकता ना कहीं मिली पावेलें ।5।

एह देश के एगो महान् विशेषता इहो बा कि इहाँ अनेक धर्मन के लोग निवास करेला। सब लोग के भेष–भूषा अलग–अलग भइला का बादो सब लोग एक सूत्र में बँध के अनेकता में एकता के मिशाल बा, जवन आउर कहीं नइखे।

हिंदू मुस्लिमऽ सिक्खऽ अउरी इसाई जहाँ।
सब लोग मिली जूली एकता बनावेलें ।6।

इहाँ हिंदू, मुस्लिम, सिक्ख आ इसाई सब लोग अलग–अलग धर्माबलंबी भइला का बादो एक संगे मिल जुल के रहेला।

धरती पर चारो ओर घूमी के अब देखि आव।
मानवता के अइसन रूप ना कहीं मिलि पावेलें ।7।

धरती पर विराजमान सब देशन के देखला से अइसन बुझाता कि अइसन मानवतावादी दृष्टिकोण दृनिया का कवनो देश में नइखे।

www.bhojpurisahityangan.com

अइसनऽ देशऽ जेकर छवि बा अनूप सुनऽ।
केहू नाहीं एकर गुणगान करी पावेलें।8।

एह देश के छवि अनुपम बा, जवना के उपमा दोसरा देश खातिर नइखे दिहल जा सकत। केहू व्यक्ति एकर गुणगान नइखे कर सकत।

गुण गावत थकी गइलें सुर नर मुनि सबऽ।
कहाँ केहू एकर गुणगान करी पावलें।9।

एकरा गुण के बखान करत देव मुनि सब लोग हार गइल, बाकि सांगो पांग एकरा गुण के बखान ना कर पावल।

माई भूमि के जे केहू परम सपूतऽ बाटे।
जानवा के बाजी देई प्राण में बसावेलें।10।

मइया भारती के परम सपूत देश भक्त लोग दिन रात जागरण करके सीमा पर दुश्मन से लोहा लेत प्राण से बढ़ के रक्षा करे में लागल बा।

अब नाहीं अँखिया उठाई केहू देशवा पर।
सबऽ नर नारऽ मिली लाज के बचावेलें।11।

आज का वर्त्तमान समय में सीमा पर भारत के जवान सब दिन–रात एक कर के आपन नींद हराम कर के पक्का चौकीदारी कर रहल बा कि अब केहू का हिम्मत नइखे जे केहू हमरा माई भूमि पर आँख उठा सके। एकरा खातिर देश के पूरा नर आ नारी सब मातृभूमि का रक्षा खातिर कमर कस के तइयार बा।

www.bhojpurisahityangan.com

करत बखानऽ मनऽ कबो ना अघात अबो ।
दुनिया के लोग दर पे शीषवो झुकावेलें ।12।

कतनो गुणगान कइल जाव, बाकि मन संतुष्ट नइखे होत। अब दुनिया के लोग मइया भारती के गुण गा रहल बा आ एकरा सामने नतमस्तक हो रहल बा।

दिन उहो दूर नाहीं बाटे अबऽ सुनीं सभे ।
आजुए त जगऽ विश्वगुरू बूझि पावेलें ।13।

अब ऊ दिन दूर नइखे, जवना के प्रतीक्षा बा। पूरा विश्व के लोग आजे जगतगुरू का रूप में भारत के देख रहल बा।

उत्तरऽ में हिमगिरि खड़ा पहरादारऽ इहाँ ।
नाहीं केहू एकरा से अँखिया मिलावेलें ।14।

एह देश का उत्तर में हिमालय पर्वत अडिग हो के खड़ा बा, जवन एने से पहरादार बन के रखवाली कर रहल बा, जवना का चलते कवनो देश का आँख मिलावे में हजारन बार सोंचे के पड़ेला।

अब कहाँ चीनी लोगऽ आवे के हिम्मत करीहें ।
भारत के जवानऽ दालऽ दरी के देखावेलें ।15।

अब चीनी फौज का भारत पर आक्रमण करे के हिम्मत कहाँ बा। इहाँ भारत के जवान सब सरहद पर सीना तान के पल–पल जबाब देवे ला तइयार बा आ दुश्मन का छाती पर दाल दरे खातिर हर क्षण तइयार बा।

www.bhojpurisahityangan.com

परब–त्योहारऽ जहाँ मिली के मनावत सभे।
तनिक नाहीं मनवा में भेद उपजावेलें ।16।

हिंदू, मुस्लिम, सिक्ख आ इसाई सब लोग इहाँ मिल जूल के परब–त्योहार मनावेला। केहू का मन में कवनो भेद–भाव देखे के ना मिले।

जाति धरम सब कुछऽ दूर करी मनवा से।
आपसऽ में मिलि जूली प्रेम रस बहावेलें ।17।

इहाँ सब जाति धरम के लोग जात–पाँत आ धर्म भेद के छोड़ के आपस में मिल–जूल के प्रेम पूर्ण जीवन बितावेलें, जवना से एगो विशेष आनंद के अनुभूति होला।

देशऽ अवतारन के इहो ह महान् सुनऽ।
साधु संत भक्त लोगऽ प्रभु गोहरावेलें ।18।

इहे अइसन देश बा जहाँ प्रभु के बार–बार अवतार होत रहल बा। इहाँ साधु संत भा भक्त सभे नित्य निरंतर प्रभु का इयाद में आपन जीवन बितावत रहेलें। भगवान कृष्ण के ई कहनाम बा कि जब–जब धर्म के हानि होला तब–तब हम अपना योगमाया से प्रगट हो के साधु–संत लोग के रक्षा करी ले आ दुष्टन के संहार करीले।

प्रेमे हटे जिन्दगी तू प्रेमे से जीवन जीअ।
शांति के संदेश दे के प्रेम रस बहावेलें ।19।

प्रेमे जीवन ह। हे मानव! तू प्रेम से आपन जीवन जीअ। शांति दूत इहे संदेश दे के मानव समाज में प्रेम रस बहावलें।

www.bhojpurisahityangan.com

विश्व शांति दूत प्रेमऽ घूमी–घूमी दुनिया में।
शांति के संदेश दे के सबके चेतावेलें।20।

विश्व शांति दूत प्रेम दुनिया में घूम–घूम के पूरा मानव समुदाय के शांति के संदेश दे कि शांति हर मनुष्य का हृदय में पहिलहीं से विराजमान बा चेतावत बाड़ें।

तनिक नाहीं डर इहाँ हिम गिरिराज जहाँ।
जड़ी–बूटी संगे गंगा जल बहवावेलें।21।

इहाँ गिरिराज हिमालय अचल–अडिग हो के खड़ा बाड़ें, जहाँ से गंगा जल जड़ी–बूटी का संगे बहत धरती पर उतर गइल बा, जवना से नाना प्रकार का विमारियन से मनुष्य निजात पावेलें। अइसन नदी आउर कही नइखे।

दक्खिनऽ दिशा में सिंधु धारऽ बा बहत जहाँ।
केनहूँ से दुश्मन तनिको पार नाहीं पावेलें।22।

एह देश का दक्षिण में सिंधु के तेज धार बहत बा, जवना का चलते कवनो ओरी से दुश्मन लोग का आवे के राह नइखे।

गंगा रे जमुन जसऽ आउर नाहीं नदी कहीं।
सरस्वती नदी से मिलि त्रिवेणी कहलावेलें।23।

एह धरती पर गंगा यमुना जइसन आउर दोसर नदी कतहीं नइखे, जवन सरस्वती से मिल के त्रिवेणी कहाले। इहाँ त्रिवेणी में नहा–नहा के लोग पुण्य संचित करे ला।

www.bhojpurisahityangan.com

कलकल निनाद संगे गंगा जस पवितर जलऽ।
दुनिया में अउरी कहीं नाहीं मिल पावेलें।24।

कलकल ध्वनि का संगे बहत गंगाजल जइसन पवित्र जल दुनिया में आउर कतहीं ना मिल पावेला।

संत में महान संतऽ नानकऽ कबीर जसऽ।
जन–जन में अलख के गति लखवावेलें।25।

संत लोगन में महान् संत कबीर दास आ गुरूनानक देव जइसन संत दुनिया में आउर कहीं ना भइलें जे हर व्यक्ति में अलख के लखा देवे के ज्ञान के जयोति फइला दिहलस।

शांति के संदेशऽ सुनी प्रेमऽ के बखानवा से।
देशवा के लोग अबऽ आनंद खूब मनावेलें।26।

विश्व शांति दूत प्रेम के शांति के संदेश सुन के देशवासी लोग खूब आनंदमग्न हो जाला।

भक्त कवि विद्यापति कालीदासऽ सूरऽ आउर।
खुसरू निजामऽ ख्वाजा पलटु बतलावेलें।27।

भक्त कवि विद्यापति, कालीदास, सूरदास, सूफी संत अमीर खुसरो, ख्वाजा जाने अली चिश्ती चाहे पलटु दास इत्यादि सब लोग इहे बतावेला।

www.bhojpurisahityangan.com

गालिब टैगोर दादू कामता आउर लक्ष्मी सखी।
परमऽ पुरूष के दरशन भीतरे करावेलें।28।

गालिब, टैगोर, दादू, कामता सखी चाहे लक्ष्मी सखी ई सब संत लोग परम पुरूष (परमात्मा) के दर्शन घट में विराजमान हंस का रूप में करावेलें। कहे के मतलब कि आत्मज्ञान करा के परमात्मा के बोध करावलें।

बुद्ध महावीरऽ रामऽ कृष्ण के बखान जहाँ।
विवेका विश्वामित्र जहाँ ध्वज फहरावेलें।29।

भगवान बुद्ध, महावीर, श्रीराम, कृष्ण, स्वामी विवेकानंद आ विश्वामित्र जइसन महान् विभूति लोग देश के मान–सम्मान पूरा विश्व में फइला दिहलस।

रामकृष्ण परमहंसऽ साधकऽ महान् जहाँ।
साधना का बले सब देवऽ के बोलावेलें।30।

रामकृष्ण परमहंस जइसन महान साधक भइलें, जे अपना साधना का बल से कवनो देवी–देवता भा भगवान का कवनो रूप के प्रत्यक्ष करा देवे के क्षमता राखत रहलें।

रामचरित मानस के करी के रचनवा से।
तुलसीदासऽ जन–जन का ओठवे पर छावेलें।31।

संत शिरोमणि तुलसी दास अइसन महान् संत रामचरितमानस के अतना सुन्दर रचना कर दिहलन कि हर मनई का जुबान पर एकर पॉति बसल रहेला।

www.bhojpurisahityangan.com

आतमज्ञान के करी के बखान सबऽ संतऽ लोगऽ।
घटहीं में ईश्वर के रूप दरशावेलें।32।

निर्गुण विचारधारा के संत लोग आत्मज्ञान के बखान कर के चाहे जिज्ञासु मनई के घट–घट में आत्मा के बोध करा के ईश्वर का स्वरूप के दर्शन हर व्यक्ति का हृदय में करावेलें।

ऋतुअन के गति जहाँ भिन्न–भिन्न बाटे तबो।
लोगऽ सबऽ समरसऽ दिनवा बितावेलें।33।

भारतवर्ष में विभिन्न ऋतुअन का भइला का बादो इहाँ के लोग समरस जीवन व्यतीत करेला।

दूई रे महिनवा पर बदलत ऋतु जहाँ।
सबऽ ऋतु अनुपम बहार ले के आवेलें।34।

एह देश में हर दू महिना पर ऋतु परिवर्त्तन होत रहेला। अइसे त मुख्य रूप से लोग तीने गो जाड़ा गरमी आ बरसात मानेला, बाकिर ऋतु छव गो ह। बसंत, गरमी, बरसात, सरद, जाड़ा आ शिशिर। सबके अलग–अलग अनुभव आ आनंद बा, जवन अनुपम बा।

चढ़त बसंत ऋतु गजबे सोहावन लागे।
धरती के रूपवा अनूपऽ देखलावेलें।35।

बसंत ऋतु का आवते धरती के शोभा बढ़ जाला। हर पेड़ पौधा में गजब के हरियाली आ जाला भा फूल आ मंजर से पेड़ पौधा सज जाला। पौधन में नया–नया कलश का आ गइला से पौधा सब के सुन्दरता

www.bhojpurisahityangan.com

बढ़ जाला आ धरती सोहावन लागेले। कवि भा कवयित्री लोग का हृदय में एगो गजबे के उमंग आ जाला आ ऊ लोग ओह आनंद के शब्दन में बान्ह के रचना करे से ना चुके। जइसे सुमन सिंह 'सुमन' के एगो रचना बा–

आइल बसंती बहार हो,
दिगमिगाइल धरतिया हो।
खेतवा भइल कचनार हो,
दिगमिगाइल धरतिया।

बहत पुरवइया अउरी पछुआ बेयार सुनऽ।
गछियन का फूलवन के गंध फइलावेले।36।

पुरवइया आ पुछुआ बेयार जब झोंका से बहेला त अपना संगे फूल का भिनी–भिनी सुगंध के ले आ के हर व्यक्ति का मन के मोह लेवेले।

प्रवासी रे चिरईयन के मीठी–मीठी तानऽ अब।
जन–जन का हियरा में जगहो बनावेले।37।

ऋतु परिवर्त्तन का अनुसार भिन्न–भिन्न प्रकार का चिरईअन के आगमन हो जाला, जवना के मीठ–मीठ बोली हर व्यक्ति का मन के लोभा लेवेला।

कोइली के कूहू–कूहू पपिहा के पिउ–पिउ।
होत भिनुसार ब्रह्म बेला में जगावेले।38।

कोइल के कू–कू आ पपिहा के पीकहाँ–पीकहाँ के आवाज होते भिनुसार माने पौ फाटे का पहिलहीं हर व्यक्ति के सुतले में जगादेवेले।

www.bhojpurisahityangan.com

धूपवो चननवा के खुशबू पवन लेके।
खूबऽ रे सुगंधऽ भीनी–भीनी फइलावेले ।39।

जब मंद–मंद गति से हवा बहेला त ऊ अपना संगे धूप आ चंदन का सुगंध के ले के चारो ओर फइलावेला, जवना के पा के लोग खूब आनंद लेवेला।

सुँघत त सुगंध गंधऽ मस्ती में लोग इहाँ।
देश गीत झूमी–झूमी गाई के सुनावेलें ।40।

जब धूप, चंदन भा पुष्पन के सुगंध हवा का संगे चारो ओर वातारण के सुगंधित करेला त लोग मस्ती में झूम–झूम के एह देश का महिमा के गुणगान करेला।

सरहद पर देशऽ के जवान जहाँ गरजतऽ।
पलटन में नारी के कमाल देखि पावेलें ।41।

सरहद (सीमा) पर देश के फौजी जवान लोग सुरक्षा खातिर नींद गँवा के दिन–रात चौकसी बरते ला आ अतने ना फौजीयन में एक से एक बहादुर महिला सब के कमाल देखले बनेला। कहे के मतलब कि देश के नर–नारी सब अपना के भारत माता के सजग प्रहरी बुझेला।

अइसन देशवा के गुण का बखानीं अबऽ।
परखी अलग से दुश्मन दुमऽ सटकावेलें ।42।

कवि के कहनाम बा कि अइसन देश के गुण केतना बखानल जाव जेकरा तेज का सामने दुश्मन लोग अलगहीं से पीठ देखा के भाग जाये के कोशिश करत बा, काहे कि देश सर्व सम्पन्न हो चुकल बा, जेकरा सामने दुश्मन घुटना टेक देवे के तइयार बा।

www.bhojpurisahityangan.com

केतना ले गाईं गुणऽ कहतानीं शुभऽ सुनऽ।
खेत में किसान सबऽ फसल गीत गावेलें।43।

'शुभ' कवि के कहनाम बा कि एह देश भा देशवासी लोग का गुण के केतना बखान कइल जाव जहाँ किसान सभे खेत में खेती करत, फसल गीत गावत खूब आनंद लेत रहेला।

गरमी आ बरखा से कबहूँ ना हिचकत।
किसीम–किसीम के सबऽ अन्न उपजावेलें।44।

एह पाँतियन में देश का कृषि प्रधान भइला के सनेश दिहल गइल बा। गरमी बरसात चाहे जाड़ा काहे ना होखे किसान लोग खूब प्रेम से खेती करेला। तनिको हिचक ना होला आ किसीम–किसीम अन्न लोग उपजावत रहेला।

सोना के चिरईया ई देशवा कहात रहे।
अन्न धनऽ सोनवा लुटेरा लेई गइलें।45।

कबो ई देश सोना के चिरई कहात रहे बाकि मुगल शासक चाहे अंगरेज सब एह देश के खजाना लूट के ले गइल। ई दूनो मिल के देश के खजाना ले के चल गइल, जवना से देश के स्थिति कमजोर हो गइल।

www.bhojpurisahityangan.com

भीतरऽ से खोंखर एही देशवा के कई देलस।
तबो नाहीं नीक लोग ईमान के गँवावेलें।46।

मुगलन आ अंगरेजन का लुटला से ई देश भीतर से खोंखर हो गइल माने खाली हो गइल तबो इहाँ के नेक इंसान अपना ईमान के ना गँववलस। इहाँ परम प्रतापी महाराणा प्रताप भले घास के रोटी खइलें, बाकि ईमान के ना गँववले। अइसे एहू जा बेईमाननो के कमी नइखे तबो नेक दिल इंसान आपन ईमान ना छोड़लें।

काश्मीर सरग जसऽ हिंद का धरतिया पर।
नाहीं अइसन सरग कहीं अउरी मिल पावेलें।47।

काश्मीर के प्राकृतिक बनावट कुछ एह ढंग के बा कि एकर स्वर्ग से तुलना कइल जात रहे। एह ढंग के जगह एह धरती पर अउरी कहीं ना पावल जाला।

काशी, मथुरा, वृंदावनऽ परम सोहावन लागे।
अवध के महिमा खूबे हिया के जुड़ावेले।48।

भगवान शंकर के नगरी काशी, भगवान कृष्ण के लीला नगरी मथुरा आ वृंदावन चाहे प्रभु श्रीराम के जन्म स्थली अवध अतना सोहावन लागेला कि उहाँ गइला का बाद हृदय में एगो विचित्र आनंद के अनुभूति होला आ एकरा महिमा के गुणगान नइखे कइल जा सकत।

www.bhojpurisahityangan.com

विश्वगुरू रहे कबो दुनिया में शोर एकर।
फेर विश्वगुरू होई संत लोग बतावेलें।49।

भारतवर्ष कहियो विश्वगुरू कहात रहे। पूरा संसार में ई शोर रहे आ संत लोग के ई कहनाम बा कि ई देश फेरू विश्वगुरू बनी आ एकर झलक कुछ मिलियो रहल बा।

विश्व भर से लोग जहाँ नालंदा में पढ़े आवे।
शांति के निकेतन मशहूर कहलावेलें।50।

नालंदा खुला विश्वविद्यालय तथा बंगाल के शांति निकेतन का नाम मशहूर रहे जहाँ पूरा विश्व भर से लोग पढ़े खातिर आवत रहे।

योगी संन्यासी अउरी तपसी के देश इहो।
योग के अँजोर नाहीं चोर सहि पावेलें।51।

ई देश योगी संयासी आ तपस्वी के देश ह। एकरा योग भा अध्यात्मिक शक्ति के विश्व लोहा मानत रहे चाहे आजो मानत बा। इहाँ का योगी, संन्यासी भा तपस्वी लोग का जप–तप साधना का आगे विश्व के सारा ज्ञान झुक जाला।

बेरि बेरि कहीं सुनऽ मनवा में तनी गुनऽ।
भगत के पुकार सुनी खाली पाँवे धावेलें।52।

कवि बार–बार एह बात के दुहरावत कहत बाड़न कि एह देश का आध्यत्मिक बल के हृदय से आत्मसात करऽ काहे कि इहे अइसन देश बा जहाँ भक्त लोग के पुकार सुन के भगवान खाली पाँव दउड़ल आवेलें आ गले लगावेलें।

www.bhojpurisahityangan.com

7सबकर साथ अउरी सबका विकासऽ खातिर।
भारत के सपूत लोगऽ प्रण दोहरावेलें।53।

एह देश का हर जाति धरम के निवासी लोग का विकास खातिर भारत के सच्चा सपूत लोग दृढ़ प्रतिज्ञयी बा आ नित प्रतिदिन अपना प्रण के बार–बार दोहरा रहल बा।

इन गिनल चुनल कुछ नेता बाड़ें अब सुनऽ।
भारतऽ के माथा ऊँचा करी के देखावेलें।54।

कुछ चुनिन्दा नेता लोग अइसन बा जे अपना मातृभूमि के माथा ऊँचा करे खातिर हर तरे से कुर्बानी देवे के तइयार बा आ जेकरा चलते एह देश के ख्याति पूरा विश्व में फइल रहल बा।

हिंद के सपूत सबऽ मिली जूली एकऽ हो के।
सीमवा पर चीनऽ अउरी पाकऽ के चेतावेलें।।55।

भारत के सपूत लोग एक होके सीमा पर चीन आ पाकिस्तान दूनु देश के चेता रहल बा लोग।

सावधान रहऽ सुनऽ चीनी अउरी पाकवा से।
इहे दूनु मिली के आतंक फइलावेलें।56।

ई सब नेता लोग विश्व शांति खातिर सब देशन के चेता रहल बा कि इहे दूनु देश आतंकवादी संगठन बना के चारो तरफ आतंक फइला रहल बा।

www.bhojpurisahityangan.com

बूझऽ मति बासठऽ के हटे इहो देशवा से।
भारत के जवानऽ थुथुन रगड़ी देखावेलें।57।

चीन के ललकारत ई नेता लोग स्पष्ट चेतावनी दे रहल बा कि ऐ चीनी सब। कान खोल के सुन लऽ आ ई बात बूझ ल कि भारत अब उन्नीस सौ बासठ वाला भारत नइखे रह गइल। इहाँ के जवानन का खुला छूट मिल गइल बा कि ई जवान लोग दुश्मन के पानी पिया–पिया के मुआई।

भारत अखंड जवन फेरू से अखंड होई।
सपना ई देश भक्तऽ हिया में बसावेलें।58।

भारत जवन अखंड रहे। कुछ चाटुकारन का चलते खंडित भइल बा, ई फेर से अखंड होई। ई सपना सब देश भक्त लोग का हिया में बसल बा आ ई सपना सब साकार हो के रही।

भारत के तिरंगा पूरा विश्व में अमर होई।
शुभऽ के बा आश विश्वासऽ ई बतावेलें।59।

भारत के तिरंगा झण्डा अब विश्व के सिर मौर बन के रही। शुभ नारायण सिंह 'शुभ' के कहनाम बा कि हमरा पूरा आश आ विश्वास बा कि भारत जगतगुरू बन के रही।

www.bhojpurisahityangan.com

केतना ले गाईं गुण कहतानीं शुभऽ सुनऽ।
दुनिया के लोग सबऽ माथवा झुकावेलें ।60।

कवि के कहनाम बा कि एह देश के केतना गुण के बखान कइल जाव। ई देश विश्व में महान् आ सर्वश्रेष्ठ बा, तबे नू संसार के लोग एकरा सामने नतमस्तक बा। ई देश कवनो क्षेत्र में सब देश के अपना से पीछे छोड़ देले बा। इहाँ के लोग धर्म के क्षेत्र होखे भा कर्म के क्षेत्र होखे कबो पीछे नइखे हटल भा कबो पीछे हटे के तइयार नइखे। एह से ई देश हरदम आगे रहल बा भा रहे ला तइयार बा।

www.bhojpurisahityangan.com

कलम का दृष्टि में भारत–दर्शन

– आचार्य प्रेमचंद

मानवीय संवेग के उत्कृष्ट शिखर पर राष्ट्र प्रेम आ राष्ट्र चेतना के ध्वज तब फहराला जब काव्य कायिक स्वरूप के चौकस ज्ञान मुखर होला। कबीर का सधुक्कड़ी से रसखान के मनोवैज्ञानिक लालित्य बोध तक एह साँच के सहजता पूर्वक अवलोकन कइल जा सकत बा। ओही राष्ट्रवादी साहित्य चिंतन का मूल में नवजागरण के विविध विधागत स्वरूपन के फूल खिलल बा, जवना से साहित्य साधना के वगिया महमह गमक रहल बा। ओही करी के आगे बढ़त रूप अनूप में बटोहिया, मितवा, फिरंगिया, लुटेरवा, वकीलवा, किसानवा आदि कई गो तथ्य–कथ्य प्रधान रचना भोजपुरियो साहित्य में मणिकांचन बन के जगमगा रहल बा, जवना के एगो अत्याधुनिक तथ्य–कथ्य प्रधान स्वदीपोभव का रूप में 'भारत दर्शन' के दर्शन हो रहल बा।

प्रियवर आचार्य शुभ नारायण सिंह 'शुभ' जी एगो मजल कलमकार आ सधल साहित्यकार बानीं, जे बहुत कलात्मक चौकसी का साथ बटोहिया के मरत परम्परा के जीवित करे के मात्र प्रयासे नइखन कइले एगो अति विशिष्ट सौंदर्य बोध के राष्ट्रीय यशोगान भोजपुरी में परोस के अब आगे 'मितवा' के परम्परा के सधले बाड़न, जवन हर प्रकार से सराहे योग्य बा।

www.bhojpurisahityangan.com

आज के अश्लील बाजारवादी उपभोक्तावादी माहौल में आचार्य शुभ नारायण सिंह 'शुभ' जी एगो बहुत बड़ा अश्लीलता का विरूद्ध मनोवैज्ञानिक युद्ध के नेवता देले बाड़न, जवना खातिर यशस्वी 'भारत–दर्शन' का लेखक–कवि के कोटिशः बधाई आ हमरा ओर से सस्नेह शुभाशीष बा।

प्रेम चन्द

10.08.2023

एम0ए0एल0 टी0एम0एड0

राजकीय शिक्षा पुरस्कार प्राप्त पूर्व प्रधानाध्यापक एवं व्याख्याता

एस0एन0जी0 उच्च विद्यालय रामपुर–अटौली, सारण

मो0–9546453224

www.bhojpurisahityangan.com

भारत–दर्शन से परम्परा आ संस्कृति के बाति के अगाज

–जय शंकर प्रसाद द्विवेदी

भोजपुरिया समाज भलही अपने साहित्य आ संस्कृति के लेके समर्पित होखे भा न होखे बाकिर भोजपुरिया साहित्यकार लोग अपना देश आ समाज के लेके हरमेसा से आपन आँख खोलले आ चेतना के जागृत रखले रहेला। बुराई के लमहर ढेर से अच्छाई के सुई हेरे का आपन श्रम साध्य करम करत जरिको ना घबराला। देश आ समाज खातिर अपना दायित्वबोध से कबो मुँह ना मोड़े। एही का चलते सरकारी अनदेखियो का बाद भोजपुरी साहित्य अब कवनो दोसर भाषा के साहित्य से कम नइखे। अक्सरहाँ इहे देखाला कि भोजपुरी के साहित्यकार लोग अपना माई भाषा के खातिर साहित्य सृजन में अनथकले लागले भेंटाला। भोजपुरी के भंडार के भरत रहेला। अपना कुल्हि अइसने गुन का चलते भोजपुरी के वरिष्ठ साहित्यकार शुभ नारायण सिंह 'शुभ' आजुओ अपना लेखनी का संगे कदम–ताल करि रहल बाड़ें, जवना के उपहार 'भारत दर्शन' भोजपुरी साहित्य जगत का सोझा जाय खातिर अपना पद चाँप के गति दे रहल बा। जवना के सहज उदाहरण 'भारत दर्शन' का रूप सोझा आवे खातिर साँकल बजा रहल बा।

www.bhojpurisahityangan.com

कवि शुभ नारायण सिंह 'शुभ' 2017 में अपना पहिल काव्य संग्रह से भोजपुरी साहित्य जगत में आपन दस्तक दीहलें। तब से लेके आजु तक 5 गो काव्य संग्रह आ 2 गो भाषा विज्ञान आ भोजपुरी कथा साहित्य के उद्भव आ विकास साहित्य जगत के सोझा आ चुकल बा। उहाँ के लेखनी अनथकले चल रहल बा आ भोजपुरी भाषा के समृद्ध करि रहल बा। ओही क्रम में 'भारत–दर्शन' अब हमनी का सोझा बा। एकरा इतर कई गो पाण्डुलिपि अबही प्रकाशन के बाट जोह रहल बानी स, जवना के चर्चा 'शुभ' जी अपना पहिल प्रकाशित पोथियन में कर चुकल बाड़ें।

'भारत–दर्शन' एगो गीत बा जवना में 60 बंद बा। हर बंद अपना प्रस्तुति के सार्थक करत देखा रहल बा। संगही एह में एक–एक बंद के अर्थ का संगे राखल गइल बा। जवना से कवि आपन बाति हर पढ़निहार के हिय में पहुँचावे के सार्थक प्रयास कइले बाड़ें। एह गीत में भारत देश के महानता, विश्व गुरू होखला के कारण ऋषि लोगन के तप आ त्याग, अलगा–अलगा भेष–भूषा आ धरम होखला का बादो आपुसी सहचर्य आ एकता, अपना देश खातिर आपन प्रान अर्पित करे वाला बीर सपूतन के बलिदान आ देश के भौगोलिक चित्रणों के अपना गीत में कवि जगह देले बाड़ें। संगही एह गीत के

www.bhojpurisahityangan.com

माध्यम बना के अपना पुरूखा–पुरनियन के इयादों कइले बाड़न। ई कहल जा सकेला कि एगो सोगहग, समृद्ध आ समर्थ गीत बनल बा। एह सुघर गेय आ मनभावन गीत ला गीतकार शुभ नारायण सिंह 'शुभ के अनघा बधाई आ शुभकामना। माई सरस्वती के कृपा उनका पर अइसहीं बरसत रहें।

मंगलकामना के संगे
जयशंकर प्रसाद द्विवेदी
संपादक
भोजपुरी साहित्य सरिता
मो0–9999614657

www.bhojpurisahityangan.com

लेखक परिचय

नाम	:	**शुभ नारायण सिंह**
उपनाम	:	शुभ नारायण सिंह 'शुभ'
जन्म तिथि	:	02 जनवरी 1955 ई0
शिक्षा	:	एम0 ए0 (हिन्दी) बिहार विश्व विद्यालय मुजफ्फरपुर, बी0टी0 प्राथमिक शिक्षक शिक्षा महावि0 थावे, सारण (बिहार)
पेशा	:	अवकाश प्राप्त शिक्षक आ पूर्व अंचल अध्यक्ष प्राथमिक शिक्षक संघ तरैयाँ (सारण)
माता	:	स्व0 कौशल्या देवी
पिता	:	स्व0 शिवशंकर सिंह अवकाश प्राप्त शिक्षक
इकलौती बेटी:		श्रीमती सुमन कुमारी पति–श्री नागेन्द्र कुमार सिंह (चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट)
स्थायी पता	:	ग्राम–चरिहारा, पो0–मशरक जिला–सारण (बिहार) पिनकोड– 841417 मो0–9939789181
अध्यक्ष	:	अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य महासभा बिहार ईकाई।

www.bhojpurisahityangan.com

सम्मान : (1) बाबू रघुबीर नारायण सम्मान 2016 ई0 हेलो भोजपुरी (राष्ट्रीय मासिक पत्रिका)

(2) भिखारी ठाकुर सम्मान 22 मार्च 2017 ई0 खानकाहे आलिया इमामिया शफियाबाद शरीफ, थाना–बैकुण्ठपुर, जिला–गोपालगंज (बिहार)

(3) बज्म ए सुहैल सम्मान छपरा 2017 ई0।

(4) साहित्य रश्मि सम्मान 2017 ई0 साहित्यिक संस्था छपरा द्वारा प्राप्त।

(5) वज़्म–ए–हबीब सम्मान 2018 ई0 बरौली गोपालगंज (बिहार)

(6) पं0 धरीक्षण मिश्र साहित्य सम्मान 2018 ई0 सर्व भाषा ट्रस्ट नई दिल्ली द्वारा प्राप्त।

(7) पं0 कुबेरनाथ मिश्र 'विचित्र' स्मृति सम्मान 2020 ई0 विश्व भोजपुरी परिषद् नई दिल्ली।

(8) हबीब भोजपुरी विकास मंच छपरा साहित्य सेवी सम्मान 2021।

(9) अक्षवर दिक्षित स्मृति सम्मान भोजपुरी विकास मंडल सिवान द्वारा प्राप्त।

www.bhojpurisahityangan.com

www.bhojpurisahityangan.com

www.bhojpurisahityangan.com

नाम	:	**शुभ नारायण सिंह**
उपनाम	:	शुभ नारायण सिंह 'शुभ'
जन्म तिथि	:	02 जनवरी 1955 ई0
शिक्षा	:	एम0 ए0 (हिन्दी) बिहार विश्वविद्यालय मुजफ्फरपुर, बी0टी0 प्राथमिक शिक्षक शिक्षा महावि0 थावे, सारण (बिहार)
पेशा	:	अवकाश प्राप्त शिक्षक आ पूर्व अंचल अध्यक्ष प्राथमिक शिक्षक संघ तरैयाँ (सारण)
माता	:	स्व0 कौशल्या देवी
पिता	:	स्व0 शिवशंकर सिंह अवकाश प्राप्त शिक्षक
इकलौती बेटी	:	श्रीमती सुमन कुमारी पति–श्री नागेन्द्र कुमार सिंह (चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट)
स्थायी पता	:	ग्राम–चरिहारा, पो0–मशरक जिला–सारण (बिहार) पिनकोड– 841417 मो0–9939789181
अध्यक्ष	:	अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य महासभा बिहार ईकाई।

शिवालिक प्रकाशन

4648/21, GF, Ansari Road, Darya Ganj
New Delhi - 110002
Ph./Fax : 011-42351161
E-mail : shivalikprakashan@gmail.com
Website : www.shivalikprakashan.in
Facebook/Shivalikprakashan

₹ 225

ISBN: 978-81-961005-8-2